12 मई, 2015

स्मृति

मीठे बच्चे: योगबल की ताकत से कर्मेंद्रियां शीतल बनती हैं । कर्मेंद्रियां चलायमान होती हैं । तुम्हें कर्मेंद्रियों को वश में करना है जिससे कोई चलायमानी ना हो । जब तक योगबल नहीं है तब तक कर्मेंद्रियों को वश में करना असम्भव है । योगबल में ताकत होती है ।
प्यारे बाबा, आज आपका प्रेम अनुभव करने का मेरा दृढ़ संकल्प है । मैं बाबा के प्रकाश और सुंदरता के सागर में खोया हुआ हूँ और संसार में मेरी कोई रूची नहीं है ।

स्मृर्थी

ऊपर की स्मर्ती से प्राप्त होने वाली शक्ति से मैं स्वयं को निरंतर सशक्त अनुभव कर रहा हूँ । मुझमें इस बात की जागृती आ रही है कि मेरी स्मृर्ती से मेरा स्वमान बढ़ता जा रहा है । मैं इस बात पर ध्यान देता हूँ कि मेरी स्मृर्ती से मुझमें शक्ति आ रही है और इस परिवर्तनशील संसार में मैं समभाव और धीरज से कार्य करता हूँ ।

मनो-वृत्ति

बाबा आत्मा से: सर्वप्रथम अपनी कर्मेंद्रियों को वश में करो और फिर दिव्य गुण धारण करो । जो क्रोध करता है उसकी बात मत सुनो । उसको एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल दो । किसी भी खराब बात को जो तुम्हें अच्छी नहीं लगती उसे मत सुनो ।
अनासक्ति भाव को अपनाने का मेरा दृढ़ संकल्प है । मैं देखता हूँ लेकिन नहीं देखता हूँ । मैं सुनता हूँ लेकिन नहीं सुनता हूँ । मैं संसार में बहुत शांति से रहता हूँ । चाहे मेरे चारों ओर कुछ भी होता रहे लेकिन मैं प्रेम ही बांटता हूँ ।

दृष्टि

बाबा आत्मा से: जब तुम देखो कि तुम्हारा पति क्रोध कर रहा है तो उस पर फूलो की बरसात कर दो । उसकी ओर देखकर सदा मुस्कुराते रहो ।
मेरा दृढ़ संकल्प है कि हर परिस्थिति में मुझे फायदा देखना है और हरेक आत्मा में मुझे सुन्दरता देखनी है । मैं अपनी आंखों में चमक और जोश भरकर संसार को देखता हूँ ।

लहर उत्पन्न करना

मुझे शाम 7-7:30 के योग के दौरान पूरे ग्लोब पर पावन याद और वृत्ति की सुंदर लहर उत्पन्न करने में भाग लेना है और मन्सा सेवा करनी है । उपर की स्मृर्ति, मनो-वृत्ति और दृष्टि का प्रयोग करके विनिम्रता से निमित् बनकर मैं पूरे विश्व को सकाश दूँगा ।